5.4 Accounting on Partnership Firm Dissolution

साझेदारी फर्म के विघटन पर किए जाने वाले लेखे

जब किसी भी कारण से साझेदारी फर्म का विघटन होता है, तब फर्म की पुस्तकें बन्द कर दी जाती हैं। फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए निम्नलिखित लेखांकन क्रियाएं करनी पड़ती हैं:–

1. फर्म की पुस्तक में आवश्यक जर्नल (**Journal Entries**) के लेखे करना।
2. आवश्यक खातों को खोलना। जैसे –

   क. वसूली खाता (**Realisation Account**) बनाना – वसूली खाता बनाने पर खाते की शेष राशि लाभ या हानि होती है जिसे सभी साझेदारों के बीच लाभ–हानि अनुपात (**Prifit and Loss Ratio**) में विभाजित कर उनके पूँजी खाते में हस्तान्तरित कर दी जाती है।

   ख. साझेदारों के ऋण (**Partner's Loan Account**) खाते बनाना – यदि किसी साझेदार के ऋण खाते हों तो उन्हें भुगतान कर उनके खाते को बन्द कर देना।

   ग. सभी साझेदारों का पूँजी (**Partner's Capital Accoun**) खाता बनाना – इस खाते के बनाने से यह पता चलता है कि किस साझेदार के पूँजी खाते में कितना जमा शेष (**Credit Balance**) निकलता है अर्थात् फर्म को कितना भुगतान करना है या कितना डेबिट शेष (**Debit Balance**) निकलता है। डेबिट शेष से आशय है पूँजी की कमी है। अतः पूँजी की कमी (**Defficiency of Capital**) होने पर ऐसे साझेदार को अपनी निजी सम्पत्ति व जाएदाद से क्षतिपूर्ति के लिए कितनी नकद राशि लानी होगी तभी उसका खाता बन्द हो पाएगा।

   घ. रोकड़/अथवा बैंक खात)ा बनाना – इस खाता के दोनों पक्षों के योग स्वतः बराबर हो जाते हैं तथा इस प्रक्रिया के बाद सभी खाते भी स्वतः बन्द हो जाते हैं।

****